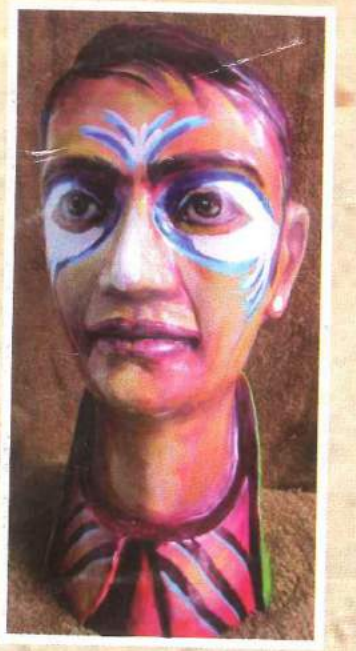

ISSN 2278-554 X Lamahi

लमही

जनवरी–मार्च 2019

डॉ धमन्द्र प्रताप सिंह/Dr. Dharmendra Pratap Singh
सहायक आचार्य/Assistant Professor
हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग/Dept. of Hindi & Comparative Literature
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय/Central University of Kerala
तेजस्विनी हिल्स, पेरिया डाक/Tejaswani Hills, Periye P.O.
कासरगोड/Kasargod- 671316 (केरल/Kerela)
Mob- 09453476741

₹15/-

संभावना ।।
कविताएं –अनुराग अटोरिया 90
ज़रूरी किताबें ।।
कविता, कहानी और कुछ अन्य नोट्स –प्रांजल धर 92
अध्ययन कक्ष ।।
असगर वजाहत की किताब पर –डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह 98
ममता कालिया की किताब पर –कल्पना पंत 99
दामोदर दत्त दीक्षित की किताब पर –मुक्ता टण्डन 102
चित्रा मुद्गल की किताब पर –संजय नवले 103
रणीराम गढ़वाली की किताब पर –प्रो. अवध किशोर प्रसाद 106
विपिन शर्मा अनहद की किताब पर –स्वाती ठाकुर 107
अखलेश्वर पाण्डेय की किताब पर –डॉ. चेतना वर्मा 109
रजनी गुप्त की किताब पर –अनुराधा सिंह 110
तिथि दानी ढ़ोबले की किताब पर –डॉ. स्मृति शुक्ला 112
दया दीक्षित की किताब पर –सतीश गुप्ता 115
आशा प्रभात की किताब पर –नरेन 117

आवरण : सुधीर शर्मा के मूर्तिशिल्प

प्रधान संपादक* □ विजय राय
संपादक* □ ऋत्विक राय
संयुक्त संपादक* □ ऋतिका
□ गीतिका शर्मा
□ वत्सल ककक्कड़

संपादकीय एवं व्यवस्थापकीय संपर्क
3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर लखनऊ–226010
ईमेल : vijairai.lamahi@gmail.com, मो0 : 9454501011
इस अंक का मूल्य : 15/– रुपये मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : 1000/–रुपये मात्र

"लमही का वेब अंक आप Not Nul (www.notnul.com) पर पढ़ सकते हैं।"

वेब संपादक* : नीलाभ श्रीवास्तव (मो. : 08935021999)

आजीवन सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'लमही' (LAMAHI) के नाम से इस पते पर भेजें– 3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226010 (उत्तर प्रदेश)

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे त्रैमासिक पत्रिका 'लमही' और उसके संपादक–मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा

"लमही" की स्वत्वाधिकारी, मुद्रक एवं प्रकाशक मंजरी राय के लिए श्रीमंत शिवम् आर्ट्स, 211 पाँचवीं गली, निशातगंज, लखनऊ से मुद्रित तथा 3/343, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 से प्रकाशित।
संपादक–ऋत्विक राय*
*सभी अवैतनिक
वर्ष: 11 • अंक: 3 • जनवरी–मार्च 2019

यात्रा–साहित्य को समृद्ध करता 'अतीत का दरवाजा'

■ डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह

उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, संस्मरण, आलोचना, पत्र आदि के द्वारा हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान बना चुके असग़र वजाहत का नाम हिन्दी यात्रा–साहित्य में भी उल्लेखनीय है। 'चलते तो अच्छा था', 'रास्ते की तलाश में', 'पाकिस्तान का मतलब क्या', जैसे यात्रा–संस्मरणों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने वाले इस लेखक की नवीनतम कृति 'अतीत का दरवाजा' लेखन का अगला पड़ाव है। उक्त यात्रा–साहित्य की भूमिका में ही कुछ पूर्वाग्रह कमजोर पड़े। प्रारम्भ में ही लेखक ने स्पष्ट कर दिया है कि आज तकनीक और इंटरनेट के युग में लेखन–कार्य, खासतौर पर यात्रा–साहित्य लिखना पहले से अधिक दुष्कर हुआ है। इसके पूर्व कुछ नये यात्रा–वृत्तान्तों को पढ़ते हुए कभी–कभी मेरे मन में ख्याल आता था कि क्या लेखक ने वाकई अपनी यात्राओं के अनुभव से लिखा है अथवा पुस्तक और तकनीक का सहारा लेकर शब्दक्रीड़ा द्वारा पाठकों को प्रभावित करने का प्रयास किया है। ऐसी आशंका का एक कारण यह भी था कि इन यात्राओं में जो खर्च आता है, उसे वहन करना क्या लेखकों (विशेषकर हिन्दी) के सामर्थ्य में है या नहीं? भूमिका में ही मेरे इस प्रश्न का उत्तर मिल जाता है जो इस कृति की मैं सबसे बड़ी सफलता मानता हूँ। यात्रा–वृत्तान्तकार ने यह भी बताया है कि किस तरह से आप अपनी यात्राओं में खर्च कम कर सकते हैं।

दूसरा महत्त्वपूर्ण पहलू लगा कि किसी भी तरह के भ्रमण को तब तक यात्रा–साहित्य के रूप में परिणत नहीं किया जा सकता जब तक आप सुनियोजित तरीके से किसी यात्रा के लिए नहीं निकलते। बिना पूर्व नियोजित यात्रा के कोई भी विवरण आप आसानी से लिपिबद्ध नहीं कर सकते। उक्त ग्रंथ में मध्य एशिया के जार्डन, यूरोप के रूमानिया, हंगरी के मारामारोश क्षेत्र और दक्षिण अमरीका के मैक्सिको की यात्राओं के विवरण लेखक ने बड़ी ही रोचक शैली में प्रस्तुत किये हैं। इस यात्रा–वृत्तान्त में सीरिया के पेत्रा, डेड सी, जार्डन की सामाजिक समस्या, बेरोजगारी, पड़ोसियों से युद्ध की स्थिति और वहाँ का खंडित जीवन, प्रशासनिक नाकामी, वादिए–मूसा (अरब) की बेरोजगारी, मारामारोश, चीक सैरदा, मध्य एशिया, रोमानिया के तानाशाह ड्रेकुला और निकोलेइ चाउशेस्कू द्वारा देश की जनता पर किये गये अत्याचार, शुर देश्त्या, योरोप के जिप्सियों की समस्या आदि सभी से सम्बन्धित सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं का उल्लेख करते हुए उससे सम्बन्धित तथ्यों की गंभीर पड़ताल असग़र वजाहत द्वारा की गई है। बहुत विस्तार में न जाकर मैं उन बिन्दुओं पर अपनी बात केन्द्रित करना चाहता हूँ जो मुझे रोचक लगे और मेरा ध्यान आकर्षित करने में सफल रहे।

प्रथम ध्यानाकर्षण यात्रा–वृत्तान्त में उत्तर पश्चिम रोमानिया के सपुनसा का कब्रिस्तान है जिसे 'मेरी सिमेट्री' के नाम से जाना जाता है। इस कब्रिस्तान के केन्द्र में 1930 के आस–पास गाँव के चित्रकार स्टन लोन पेट्राश हैं जिन्होंने अपनी चित्रकारी द्वारा एक छोटे से गाँव को वैश्विक स्तर पर पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित किया। पेट्राश की चित्रकारी तीन स्तर पर पल्लवित होती है। एक– जब उनके मन में विचार आता है कि गाँव की सिमेट्री में कब्रों पर लगे क्रास पर फूलों की सजावट के साथ यदि मरने वाले का चित्र भी बना दिया जाय। उसके इस कृत्य से गाँव का कब्रिस्तान फोटो गैलरी के रूप में विकसित होने लगा और यह कार्य गाँव वालों को भी पसंद आया। कुछ समय बाद उनके मन में पुनः विचार आया कि यदि मृतक के चित्र के साथ ही उसके व्यवसाय का चित्र उकेरा जाय तो यह लोगों को और अधिक पसंद आयेगा। तीसरा, मृतक के मृत्यु के कारणों को चित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जाय तो पर्यटकों को यह ज्यादा रुचिकर लगेगा। चित्रकार की प्रतिभा ने अपने छोटे से गाँव की आर्थिक उन्नति के साथ–साथ सभी स्तरों पहचान और प्रतिष्ठा दिलायी। स्टन लोन पेट्राश की चित्रकारी चाहे जैसी रही हो लेकिन उनकी मौलिक सोच किसी भी देश और समाज को नई दृष्टि प्रदान करती है।

इस यात्रा–वृत्तांत का दूसरा ध्यान आकर्षित करने वाला बिन्दु विषय सुस की 'लॉग ट्रेन' है। रोमानिया में विषयद सुस मारामारोश जाने वाले रास्ते में जंगल के किनारे पड़ने वाला छोटा सा कस्बा है जहाँ लकड़ी का व्यापार होता था। यहाँ पहुँचने के लिए लम्बी यात्रा के दौरान हरी घाटियों, जंगलों और पहाड़ों से गुजरना पड़ता था। लकड़ी ढोने के लिए बनाई गई ट्रेन के द्वारा किस तरह एक पिछड़े कस्बे को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाता है यह उल्लेखनीय है– "विषयद सुस का सबसे बड़ा आकर्षण 'लॉग ट्रेन' है। यह ट्रेन 'स्मालगेज' यानी छोटी लाइन से भी छोटी लाइन वाली ट्रेन है जो जंगल से लकड़ी लाने के लिए बनाई गई थी। यह रेलवे लाइन चालीस किलोमीटर जंगल के अन्दर चली जाती है। धीरे–धीरे इसके प्रति पर्यटक आकर्षित होते गये। लकड़ी काटने और बेचने वाली कंपनी पर्यटन उद्योग में आ गई। अब इन ट्रेनों में लकड़ी से ज़्यादा पर्यटक यात्रा करते हैं।" (अतीत का दरवाजा, पृष्ठ–78)